6

पौलुस का ''संसार की स्थिति'' का संदेश

(1:28-32)

इस पाठ में रोमियों 1:28-32 का अध्ययन करते हुए हम अन्यजाति संसार को पौलुस द्वारा दोषी ठहराए जाने की अपनी समीक्षा को पूरा करेंगे। इन आयतों में वह बात है, जिसे डोनल्ड बार्नहाउस ने ''परमेश्वर के वचन में पाई जाने वाली पापों की सबसे भयानक सूची'' कहा है।[1] कहा गया है कि यह वचन ''मिट रही संस्कृति के चिह्नों'' की सूची है।[2] अफसोस की बात है कि यह उस संसार का चित्रण भी है, जिसमें हम आज रह रहे हैं। हर वर्ष अमेरिका का राष्ट्रपति ''देश की स्थिति'' पर भाषण देता है। ओक्लाहोमा राज्य में, राज्यपाल ''राज्य की स्थिति'' पर वार्षिक सम्बोधन करता है। इस वचन में हमारे लिए पौलुस का पहली सदी के ''संसार की स्थिति'' का संदेश है।

एक मुख्य वाक्य (1:28)

पिछले पाठ में हमने उस अन्धकार के पौलुस के एक विशेष उदाहरण को देखा था, जिसमें मनुष्यजाति गिर चुकी थी: भोग-विलास, जिसमें समलैंगिकता भी शामिल है। पापों की उस आम सूची के साथ उसने बताया कि यह संसार को विपत्ति की ओर ले जा रही है।

पौलुस ने इस सूची के परिचय के लिए ''परमेश्वर ने उन्हें छोड़ दिया'' वाक्य का इस्तेमाल किया: ''और जब उन्होंने परमेश्वर को पहचानना न चाहा, इसलिए परमेश्वर ने भी उन्हें उनके निकम्मे मन पर छोड़ दिया; कि वे अनुचित काम करें'' (आयत 28)। यह वाक्य मुख्य है, इसलिए हमें एक बार में एक वाक्य को देखना चाहिए।

''उन्होंने परमेश्वर को पहचानना न चाहा।'' उनका अविश्वास जान-बूझकर किया गया सोचा-समझा कार्य था। एक टीका के लेखकों ने लिखा है, ''लोग परमेश्वर पर न्याय देने के लिए बैठ गए कि वह परमेश्वर होने की योग्यताओं को पूरा करता है या नहीं, जिससे वह उनका राजा बने; उन्होंने निर्णय लिया कि वह उन योग्यताओं को पूरा नहीं करता, इसलिए उन्होंने उसे अपने जीवनों में से निकाल दिया।''[3] जिम मैक्गुइगन ने इसे इस प्रकार कहा है, ''उन्होंने परमेश्वर को अपने दुनियादार तराजुओं में तौला; उन्होंने उसे अपने बुद्धिमान मनों से परखा; उन्होंने उसका नमूना लिया, उसे सूंघा, उसे नोचा, उसका अध्ययन किया और अपने लिए अयोग्य मानकर उसे एक ओर फैंक दिया!''[4] यह कितनी मूर्खता की और कितनी दु:खद बात है!

जब लोगों ने परमेश्वर को नकार दिया तो *उसने* ''उन्हें छोड़ दिया था।''[5] ध्यान दें कि उसने

उन्हें तब तक नहीं छोड़ा जबकि *उन्होंने* उसे नहीं त्यागा।

उसने उन्हें ''निकम्मे मन पर छोड़ दिया।'' अनुवादित शब्द ''निकम्मे'' (*adokimos*) नकारात्मक (*a*) के साथ ''स्वीकृत'' (*dokimos*) शब्द को मिला है। इसका संकेत उसके लिए है, जिसे अस्वीकृत किया गया है, यानी जो परीक्षा में असफल रहता है।[6] यूनानी धर्मशास्त्र में शब्दों का खेल मिलता है: *Adokimos* (''निकम्मा'') उस शब्द का नकारात्मक रूप है, जिसे आयत के पहले भाग में ''पहचानना न चाहा'' (*edokimasan*) अनुवाद किया गया है। जॉन आर. डब्ल्यू. ने यह अनुवाद सुझाया है: ''क्योंकि उन्हें परमेश्वर के ज्ञान को रखना *उपयुक्त* नहीं लगा, इसलिए उसने उन्हें *अनुपयुक्त* पर छोड़ दिया।''[7] लियोन मौरिस ने सुझाव दिया है, ''उन्होंने परमेश्वर को जानने की 'स्वीकृति' नहीं दी और [इस कारण] वे 'अस्वीकृत' मन पाने के लिए आए।''[8]

उन लोगों के मन, जिन्होंने परमेश्वर को नकारा था, विश्वास योग्य नैतिक निर्णय लेने के अयोग्य हो गए;[9] अब वे सही और गलत में अन्तर नहीं कर सकते। इसमें आश्चर्य की बात नहीं है कि संसार के लोग गिरते हुए मापदण्डों पर हमारी चिन्ता को समझ नहीं सकते और कई बार हमें ''पागल'' करार देते हैं। पौलुस के अनुसार उनके दिमाग में गड़बड़ है!

गलत निर्णय (''परमेश्वर को पहचानना न चाहा'') से गलत सोच (''निकम्मा मन'') आई, जिसके कारण गलत जीवन हो गया: वे ''अनुचित काम'' करने लगे। ''उचित'' एक मिश्रित शब्द (*heko* [''पहुंचना''] के साथ *katheko-kata* [''नीचे'']) का अनुवाद है, जिसका अर्थ है ''उपयुक्त।''[10] ''अनुचित'' बिल्कुल सही अनुवाद है, जो उचित का उलट है। जहां मैं पला-बढ़ा हूं ''जो उचित है, वह करना'' का अर्थ नैतिकताओं से अधिक तौर तरीकों से था। *दि एनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* के अनुसार रोमियों 1:28 में *केथिको* का अर्थ है ''जो घृणित या घिनौना है।''[11] ''घृणित'' और ''घिनौनी'' चीज़ों की किस्म जो पौलुस के ध्यान में थी, वह अगली आयतों में मिलती है।

फेडर डोसटोयव्स्की (1821-1881) ने लिखा है, ''यदि परमेश्वर नहीं है तो नैतिक रूप में कुछ भी गलत नहीं है।''[12] जब मनुष्य जाति ''को परमेश्वर को मानना उचित नहीं लगा'' तो इसकी अभक्ति पर कोई रोक नहीं थी यानी इसके घिनौनेपन की कोई सीमा नहीं थी।

पाप करना (1:29-31)

पौलुस ने बीस से अधिक पापों की सूची देकर मनुष्य के निकम्मेपन को स्पष्ट किया। उसने अपने समय के हर पाप का नाम नहीं दिया, परन्तु उसने विशेष पापों की सूची अवश्य दी। पौलुस के समय में हर कोई इस सूची में दिए हर पाप का दोषी नहीं था, परन्तु हर कोई इनमें से एक या अधिक पापों का दोषी अवश्य था। 1:29-31 में इस सूची को पढ़ते समय हम बिना संदेह के अपने आप को दोषी पाते हैं।

पौलुस की सूची को तर्कसंगत क्रम में संगठित करने के प्रयास हुए हैं, परन्तु उसका उद्देश्य पापों को श्रेणीबद्ध करके लिखना नहीं था। उसका उद्देश्य तो यह दिखाना था कि मनुष्यजाति उससे ''जो परमेश्वर ने उन्हें दिया'' गिर गई थी। आत्मा की अगुआई में पौलुस ने पापों को एक घिनौने ढेर के रूप में लगा दिया। परन्तु अपने अध्ययन के उद्देश्य के लिए मैं पापों की इस सूची का कुछ

वर्गीकरण करूंगा।

व्यापक/पृष्ठभूमि के शब्द

> ... सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, ... से भर गए ... परमेश्वर के देखने में घृणित, ... निर्बुद्धि, ... (आयतें 29-31)।

पौलुस ने अपनी सूची का आरम्भ यह कहते हुए किया कि अन्य जाति लोग ''सब प्रकार के अधर्म'' से भरे हुए थे। ''दुष्टता'' (*adikia*) ''धर्म'' शब्द का नकारात्मक रूप है। ''धर्म'' शब्द का एक अर्थ ''सही जीवन'' है। यहां ''अधर्म'' किसी भी प्रकार के ''गलत जीवन'' के लिए सामान्य शब्द है। ''सब प्रकार का अधर्म'' वचन में और अन्य स्थानों में दिए गए पापों को शामिल करने वाला व्यापक वाक्यांश है।

''अधर्म'' के बाद पौलुस ने उस सब की बात करते हुए जो बुरा और हानिकारक है, एक साधारण शब्द ''अधर्म'' (*poneria*) का नाम दिया।[14] सामान्य वर्ग में हम सूची में ''दुष्टता'' को भी देख सकते हैं। अनुवादित शब्द ''दुष्टता'' (*kakia*) शायद बुराई, दुष्टता या निकम्मेपन के लिए सबसे अधिक प्रचलित यूनानी शब्द है। इस शब्द का सम्बन्ध दिल से है।[15] दिल की दुष्टता अधर्म और बुराई का कारण बनती है।

पौलुस ने कहा कि वे ''अधर्म से *भर गए*'' थे। आयत 29ख में उसने यह भी जोर दिया कि वे ''वैरभाव से *भर गए*'' थे। उनके जीवनों में थोड़ा सा पाप नहीं था, बल्कि वे इससे भरे हुए थे। *AB* में है ''वे हर प्रकार के अधर्म से भरे हुए (लिप्त और तर) थे।'' डब्ल्यू. जे. कोनीबियर ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है: ''वे ईर्ष्या से लबालब भरे हुए थे।''

वचन के हमारे पाठ में दो वाक्यांश हैं, जो मनुष्यजाति की पापपूर्ण स्थिति की पृष्ठभूमि देते हैं। आयत 30 में पौलुस ने मिश्रित शब्द (*theostugeis*) का इस्तेमाल करते हुए जो ''परमेश्वर'' (*theos*) और ''घृणा'' (*stugeo*) शब्द को मिलाता है, अन्यजातियों के ''परमेश्वर के देखने में घृणित'' होने का आरोप लगाया था। इसका अर्थ ''परमेश्वर के घृणित'' (''जिनसे परमेश्वर घृणा करता है'') या ''परमेश्वर से घृणा करने वाले'' (''जो परमेश्वर से घृणा करते हैं'') हो सकता है।[16] क्योंकि इस संदर्भ में, ''सब शब्द ईश्वरीय गतिविधि के बजाय मनुष्य पर लागू होते हैं,''[17] इसलिए अधिकतर लोगों का मानना है कि पौलुस के मन में ''परमेश्वर से घृणा करने वाले'' ही होंगे। वे परमेश्वर से इसलिए घृणा करते थे क्योंकि वह शुद्ध था, परन्तु वे अशुद्ध थे। वे परमेश्वर से इसलिए घृणा करते थे, क्योंकि वह पवित्र था परन्तु वे अपवित्र थे। वे परमेश्वर से इसलिए घृणा करते थे क्योंकि वह भला था, परन्तु वे दुष्ट थे। परमेश्वर उनके और उनकी विलासिताओं के बीच में बाधा था, अर्थात वह ज़ंजीर था, जिसने उन्हें अपनी मनमर्जी करने से रोका हुआ था।[18] इसी कारण वे उससे घृणा करते थे।

इसी शब्द (*asunetos*) का इस्तेमाल करते हुए, जिसका अनुवाद आयत 21 में भी ''निर्बुद्धि'' हुआ है, पौलुस ने आगे कहा कि वे ''निर्बुद्धि'' थे। इसका अर्थ है ''बिना विवेक के।''[19] संदर्भ में इसका अर्थ समझ या शिक्षा के लिए नहीं है, बल्कि यह उस दिमाग का जो परमेश्वर ने हम में से हर किसी को दिया है, सही इस्तेमाल न कर पाना है। अपने आपको परमेश्वर से दूर कर लेना

दुष्टता ही नहीं, बल्कि मूर्खता भी है (देखें CEV)।

व्यवहार और कार्य में स्वार्थ

> ... लोभ, और वैरभाव, ... और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल, से भरपूर हो गए, ... (आयत 29)।

सामान्य शब्दों पर ध्यान करने के बाद अब हम पौलुस द्वारा दिए गए पापों की विशेष सूची पर विचार करने के लिए तैयार हैं। पाप अपने आप में स्वार्थ से भरा है, जिस कारण उसकी सूची में सबसे ऊपर ''डाह'' और ''लोभ'' थे। ''डाह'' (*phthonos*) दूसरों के अच्छे भविष्य के बारे में नाराज़गी की भावना है। मौरिस के अनुसार ''डाह'' शब्द ''हमें याद दिलाता है कि बुराई करने वाले लोग भाइयों का एक प्रसन्न समूह ही नहीं है। दुष्टता के बारे में एक विभाजन की बात है, जो लोगों को एक-दूसरे से अलग करती है।''[20] अपनी रूपकात्मक कविता *डिवाइन कॉमेडी* में डैंटे (लगभग 1265-1321) ने दुष्टता का वर्णन पलकों के एक-दूसरे के साथ सिलने के रूप में किया है। यह उसका यह कहने का ढंग था कि डाह व्यक्ति की आंखें उस सबसे, जो सुन्दर और उचित है, बन्द कर देता है।[21] हैलफोर्ड लकॉक ने कहा है कि ''जो व्यक्ति जीवन को डाह की नज़र से देखता है, वह उस व्यक्ति की तरह है, जो दांत दर्द होने के समय प्राकृतिक दृश्य को देखता है।''[22]

''डाह'' से बहुत मिलता-जुलता शब्द ''लोभ'' (plenexia) अर्थात और अधिक ... और अधिक ... और अधिक पाने की बढ़ती इच्छा है। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने लोभ को ''दूसरों के अधिकारों की चिन्ता किए बिना धन जमा करने की अत्यधिक इच्छा'' कहा है। उसने लिखा कि लोभ का पाप किसी देश के कानून में दण्डनीय नहीं हैं, परन्तु हर देश की विश्वव्यापी बेचैनी का कारण यही है।[23]

परमेश्वर रहित लोगों ने अपने लोभ को कैसे संतुष्ट किया? पौलुस ने बिना नैतिक कणों वाले लोगों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले तीन हथियारों ''छल,'' ''झगड़ा'' और ''हत्या'' का नाम दिया है। अनुवादित शब्द ''छल'' (*dolos*) का मूल अर्थ मछलियां या पशुओं को पकड़ने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले प्रलोभन की तरह ''चारा'' है।[24] इसका इस्तेमाल दूसरों को फंसाने या धोखा देने के लिए ''मक्कारी भरी किसी भी चालाकी'' के लिए किया जाता था।[25] पौलुस द्वारा वर्णित लोग झूठे, धोखे बाज और ''बहुरूपिये'' थे।

जब वे धोखा नहीं दे सकते थे तो वे ''झगड़े'' (*eris*) का सहारा लेते थे। ''झगड़े'' के लिए एक और शब्द है ''विवाद'' जिसमें लड़ना, बहस करना (CEV), ''लड़ाई'' (NCV; NLT) और ''वाद-विवाद'' (KJV) आते हैं। ये लोग जो कुछ चाहते थे, उसे पाने के लिए कहां तक जाने को तैयार थे? ''हत्या'' (*phonos*) करने तक! वे अपने रास्ते की हर दीवार गिरा देना चाहते थे!

सम्बन्धों में बिगाड़

> ... ईर्ष्या से भरपूर हो गए, और चुगलखोर। बदनाम करने वाले, ... (आयतें 29, 30)।

दूसरों के साथ अपने सम्बन्धों को प्रभावित करने के लिए अपनी जीवन शैली को अनुमति दिए बिना कोई दुष्टता के ऐसे कार्य में नहीं लग सकता। सूची में अगले तीन पाप अर्थात ईर्ष्या, चुगलखोरी और बदनामी करना सम्बन्धों को बिगाड़ने वाले हैं।

अनुवादित शब्द ''ईर्ष्या'' (*kakooethia*) ''ढंग'' या ''स्वभाव'' (*ethos*) के लिए शब्द के साथ ''बुरा'' (*kakos*) शब्द को मिलाता है।[26] जेम्स मैकाइट ने *kakooethia* को ''आदतन बुरी स्थिति'' कहा है।[27] डब्ल्यू. ई. वाइन ने इस शब्द का अर्थ '' 'एक बुरी स्थिति' बताया जो हर बात पर बुरी से बुरी रचना करने की ओर ले जाती है।''[28]

ऐसी स्थिति की दो अभिव्यक्तियां पौलुस के दो अगले शब्दों ''डींगमार, बुरी-बुरी बातों के बनाने वाले'' (आयत 30) में मिलती हैं। अनुवादित शब्द ''डींगमार'' (*psithuristes* के बहुवचन रूप) का मूल अर्थ ''काना-फूसी करने वाले'' हैं (देखें KJV)। ''काना-फूसी करने वाले'' और ''बुरी-बुरी बातों के बनाने वाले'' (*katalalos* के बहुवचन रूप) दोनों ही चरित्र के हत्यारे हैं; परन्तु काना-फूसी करने वाले बन्द दरवाज़ों में ऐसा करते हैं, जबकि बुरी-बुरी बातों के बनाने वाले ऐसा खुलेआम करते हैं। मोसेस ई. लार्ड ने उनके नीच काम को इस प्रकार बताया है:

> *काना-फूसी करने वाले ...* अपने आप को बहुत भोला दिखाते हैं और आहत करने वाली अपनी कहानी बेशर्मी से बताते हैं। बताने के बाद वे आपसे यह आश्वासन लेते हैं कि यह बात दूसरों तक नहीं जानी चाहिए, जिससे उन्हें हानि हो जाए। ... *बुरी-बुरी बातें बनाने वाले ...* जानते हैं कि उन्हें क्या पता नहीं होना चाहिए और वह सब बताते हैं, जो उन्हें नहीं बताना चाहिए। ... वे कभी भेद की बातें नहीं बताते, परन्तु ऐसी बातें कुख्यात रूप से सच्ची हो ही जाती हैं! इसलिए वे भीड़ में से किसी को उनके झूठ की पुष्टि करने का आग्रह करते हैं।[29]

स्वार्थ का व्यक्त किया जाना

> ... औरों का अनादर करने वाले, अभिमानी, डींगमार, ... (आयत 30)।

हमने सुझाव दिया है कि पाप अपने आप में स्वार्थ से भरा है। पौलुस ने आगे स्वार्थ की तीन अभिव्यक्तियों का नाम दिया है। उसने कहा कि लोग ''औरों का अनादर करने वाले,'' ''अभिमानी'' और ''डींगमार'' थे। इन विशेषताओं को इकट्ठे किया जा सकता है, जैसा कि कई बार औरों का अनादर करने वाले, अभिमानी और डींग मारने वाले लोगों में पाया जाता है, परन्तु हर शब्द की पड़ताल करना लाभदायक है। अनुवादित शब्द ''औरों का अनादर करने वाले'' (*hubrites*) विशेष रूप से प्रतिकूल हैं। यह उसके लिए इस्तेमाल किया जाता है, जो ''अत्याचारी'' और ''बेकाबू हिंसक'' हो।[30] विलियम बार्कले ने लिखा है कि ''*hubris* ... क्रूर प्रेम है, जो दूसरों को दु:ख पहुंचाकर केवल इसलिए आनन्दित होता है कि वे दु:खी हुए हैं।''[31]

अगले दो शब्द ''अभिमानी'' और ''डींगमार'' एक-दूसरे के बहुत निकट हैं। ''अभिमानी'' (*huperephanos*) शब्द ''ऊपर'' (*huper*)के अर्थ वाले उपसर्ग और ''प्रकट होना'' (*phainomai*) के अर्थ वाले शब्दों से लिया गया है। इसका अर्थ है ''अपने आप को दूसरों से

ऊपर प्रस्तुत करना।'' एक प्राचीन यूनानी लेखक ने इस शब्द की परिभाषा ''अपने अलावा हर किसी के लिए कुछ तिरस्कार'' के रूप में की है।[32]

अभिमान की एक अभिव्यक्ति डींग मारना है। अनुवादित शब्द ''डींग मार'' (*alazon*) ''भटकना'' के लिए शब्द (*ale*)[33] से लिया गया है और इसका एक दिलचस्प इतिहास है।[34] इसका इस्तेमाल घुमक्कड़ व्यापारियों के लिए किया जाता था, जो ''चमत्कारी'' औषधियां बेचते थे या संदिग्ध माने जाने वाले उत्पाद देते थे। उनके दावे बड़े-बड़े, बिना सिर पैर के और आम तौर पर झूठे होते थे। *Alazon* का अर्थ डींग मारने और अपनी औकात से ज्यादा बड़ाई करना हो गया। आज भी यह सच है कि ''विनाश से पहले गर्व और ठोकर खाने से पहले घमण्ड आता है'' (नीतिवचन 16:18)।

खतरनाक दो

... बुरी-बुरी बातों के बनाने वाले, माता-पिता की आज्ञा न मानने वाले (आयत 30)।

पौलुस ने आगे दो विशेषताएं बताईं, जो कहीं न कहीं अकेली हैं, परन्तु एक-दूसरी बुराई के साथ जुड़ी हैं। पहली तो मुझे पहेली जैसी लगती है: वे ''बुरी-बुरी बातों के बनाने वाले'' थे (रोमियों 1:30)। ''बनाने वाले'' एक मिश्रित यूनानी शब्द (*epheuretes*) से लिया गया है। ''बुरी-बुरी'' (*kakos*) पिछली आयत वाले मूल शब्द के लिए ''दुष्टता'' वाले मूल शब्द से ही लिया गया है। ऐसे लोग केवल बुरे रहकर संतुष्ट नहीं थे; उन्हें बुरे होने के नये-नये ढंग *निकालने* थे! उन्होंने अपने लोभ को ''संतुष्ट करने'' के नये-नये ढंग निकाल लिए, अपनी वासना की भूख मिटाने के लिए नये-नये ढंग, अपने अधर्म को ''उचित ठहराने'' के लिए नये-नये तरीके निकाल लिए। जिम टाउनसेंड ने उन्हें ''बुराई के एडिसन'' नाम दिया।[35]

यह नाम दिया जाना इस तथ्य को दिखाता है कि पाप चाहे बहुत सी प्रतिज्ञाएं करता तो है, परन्तु अन्त में यह अपनी प्रतिज्ञा को पूरा नहीं करता; यह केवल मायूसी ही देता है। पाप करने से वही ''रोमांच'' पाने के लिए पापी और अधिक पाप करता रहता है। वह पाप करने के नये-नये ढंग अपनाता है!

अलग अपराध इतना आम है कि कइयों के लिए यह वीभत्स पापों की गिनती में शामिल नहीं होगा: पौलुस ने कहा कि बच्चे ''माता-पिता की आज्ञा न मानने वाले'' थे। अनुवादित शब्द ''आज्ञा न मानने वाले'' (*apheithes*) में ''सहमत करना'' (*peitho*) के लिए शब्द में नकारात्मक (*a*) को जोड़ता है, इसका अर्थ है ''मानने को तैयार न होने वाला, ... अवज्ञाकारी।''[36] इस परिभाषा को पढ़ते हुए मुझे अपने दिमाग में एक विद्रोही बालक का ध्यान आता है, जो अपने माता-पिता को ''पर *क्यों*?'' कहते हुए रें-रें करता है। बाइबल बताती है कि हमें अपने माता-पिता का आदर और सम्मान करना चाहिए और उनका कहा मानना चाहिए (इफिसियों 6:1-3), और उनके बुढ़ापे में उनकी देखभाल करनी चाहिए (1 तीमुथियुस 5:4, 8)। पुराने नियम में विद्रोही बच्चों को पथराव करके मार दिया जाता था (व्यवस्थाविवरण 21:18-21)।

बाइबल बच्चों के अपने माता-पिता का आदर करने और उनकी आज्ञा मानने पर इतना ज़ोर

क्यों देती है ? माता-पिता की आज्ञा न मानना पौलुस की सूची में शामिल क्यों हुआ ? क्योंकि जो बच्चा घर में आदर करना और आज्ञा मानना नहीं सीखता, वह स्कूल में भी हुड़दंग मचाएगा, काम करने की जगह अविश्वसनीय होगा, अपने सम्बन्धों में स्वार्थी होगा और (यह उसके हृदय की समस्या है) प्रभु के आगे झुकने को तैयार नहीं होगा। जिनकी बात पौलुस कर रहा था, उन्हें परमेश्वर का सम्मान करना इसलिए ''सही'' नहीं लगा होगा क्योंकि अपने घरों में उन्हें अपने माता-पिता का सम्मान करना ''सही'' नहीं लगता था।

अन्तिम चार

निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मयारहित और निर्दयी हो गए (आयत 31)।

पौलुस ने आयत 31 में बुराइयों के चौराग के साथ अपनी सूची बन्द की। इनमें से एक ''निर्बुद्धि'' पर हम पहले चर्चा कर चुके हैं। तीन अन्य ''विश्वासघाती,'' ''मयारहित'' और ''निर्दयी'' हैं।

अनुवादित शब्द ''विश्वासघाती'' (*asunthetos*) में ''के साथ सहमत होना'' या ''के साथ वाचा बान्धना'' के अर्थ वाले मिश्रित शब्द (*sun* [''साथ'' या ''इकट्ठे''] के साथ *tithemi* [''रखना'']) के अर्थ में नकारात्मक (*a*) जोड़ देता है।[37] यह उसकी बात है जो ''वाचा या समझौता तोड़ता है'' (देखें KJV)। अन्य शब्दों में यह उसका वर्णन है, जो अपना वचन नहीं निभाता अर्थात जो अपनी कही गई बात को पूरा नहीं करता। इस कारण NASB में ''untrustworthy'' है जबकि CEV में ''unreliable'' है। इस विशेषता के कई आधुनिक उदाहरण दिए जा सकते हैं:[38] व्यवसायी और कारोबारी जो अपने व्यवसाय और सेवाओं के अनुरूप कार्य नहीं करते; विवाहित लोग जो विवाह के अपने वचन नहीं निभाते अन्य जो अपना वायदा कभी पूरा नहीं करते। बचपन में हम सुना करते थे कि मर्द की कही बात या हाथ मिलाने से ही सौदे को पक्का माना जाता था जबकि अब उसी काम को करने के लिए दर्जनों वकीलों और तीन रिम कागज़ की ज़रूरत पड़ती है।

''मयारहित'' (*astorgos*) के लिए विशेष रूप से एक दु:खद शब्द है। एस्टोरगोस ''प्रेम'' के लिए विशेष शब्द *storge* के लिए नकारात्मक शब्द है। *Storge* का इस्तेमाल ''पारिवारिक प्रेम,'' ''लोगों को एकजुट रखने वाले प्रेम'' के लिए होता है।[39] इसका इस्तेमाल ''विशेषतया बच्चों के लिए माता-पिता के और माता पिता के लिए बच्चों के प्रेम'' के लिए किया जाता था।[40] ऐसा प्रेम *स्वाभाविक* होना चाहिए; इसी कारण KJV में ''without natural affection'' है। क्या यह हो सकता है कि किसी में यह ''natural affection'' न रहे ? इतिहास इसका जवाब हां में देता है। बार्कले ने लिखा:

> ... यह वह युग था, जिसमें पारिवारिक प्रेम खत्म हो रहा था। बच्चे का जीवन इससे पहले कभी इतना अनिश्चित नहीं था। बच्चों को मुसीबत माना जाता है। किसी बच्चे का जन्म होने पर उसे लेकर पिता के पांव पर रखा जाता था। यदि पिता उसे उठा ले तो इसका अर्थ यह होता था कि उसने उसे स्वीकार कर लिया है। यदि वह पलटकर उसे छोड़ दे तो बच्चे

को सचमुच में फैंक दिया जाता था। कोई ऐसी रात नहीं होती थी, जब रोमी फोरम में तीस या चालीस त्यागे हुए बच्चों को फैंका न जाता हो। ...[41]

इन पक्तियों को पढ़ते हुए मेरी आंखें नम हो जाती हैं। अब गर्भपात, बच्चे को त्यागने और बाल-शोषण की बात पढ़कर भी मेरे तो रौंगटे खड़े हो जाते हैं।

सूची में अन्तिम शब्द ''निर्दय'' है।[42] ''निर्दय'' (*aneleemon*) नकारात्मक (*a* जमा *n*) से पहले ''दयालु'' (*eleemon*) के लिए शब्द है। वेमाउथ ने कहा कि वे ''दया रहित'' थे। RSV में ''ruthless'' है। बार्कले ने भी इस पर टिप्पणी की है:

> ऐसा कभी कोई समय नहीं था जब मानवीय जीवन इतना सस्ता हो। गुलाम को अपने स्वामी द्वारा कत्ल या प्रताड़ित किया जा सकता था, क्योंकि वह केवल एक वस्तु था और कानून उसके स्वामी को उस पर असीमित शक्ति देता था। ... अपने आनन्द में ही यह एक बेदर्द युग था, क्योंकि यह मलयुद्ध के खेलों का बड़ा युग था, जिसमें लोगों को मनुष्यों द्वारा एक-दूसरे की हत्या करते देखना अच्छा लगता था।[43]

आज कुछ लोग अपने ''मनोरंजन'' में और अधिक हिंसा की पुकार करते हैं। हम ''हिंसा के अत्यधिक महंगे कामों'' के बारे में पढ़ते हैं। मुझे यह बात हैरान करती है कि हम पौलुस के संसार से इतना पीछे हैं?

यूनानी धर्मशास्त्र में पौलुस की सूची के अन्तिम चार शब्द नकारात्मक *a* से ही आरम्भ होते हैं। NASB में इन शब्दों को ''un'' से आरम्भ करते हुए दिखाया गया है: ''untrustworthy, unloving, unmerciful.'' NIV में चारों शब्दों के अन्त में ''less'' लगाया है : ''senseless, faithless, heartless, ruthless.''

इस प्रकार पौलुस ने अपने समय में पाए जाने वाले विशेष पापों की तालिका दी। यह दु:खी करने वाली सूची है, जिसमें ''मानकों के अलोप होने और समाज के बिखरने पर मानवीय समाज के टूटने को'' दिखाया गया है।[44] यह मानते हुए कि पौलुस कुरिन्थुस से लिख रहा था, उसे यहां दी गई हर बुराई के उदाहरण को देखने के लिए केवल खिड़की में से झांकने की आवश्यकता थी। चॉर्ल्स हौज ने लिखा है कि, ''यद्यपि यहां दिखाई गई तस्वीर धुंधली है, परन्तु यह उतनी धुंधली नहीं है, जितनी अधिकतर यूनानी और लातीनी लेखकों द्वारा अपने देशवासियों की दिखाई जाती थी।''[45]

पापियों की प्रशंसा (1:32)

सही को ठुकराना

सूची समाप्त हो गई थी, पर पौलुस को अपने पत्र के इस भाग को पूरा करने से पहले दो टिप्पणियां करनी थीं। पहली टिप्पणी ये हैरान करने वाले शब्द हैं: ''वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं, कि ऐसे-ऐसे काम करने वाले मृत्यु के दण्ड के योग्य हैं'' (आयत 32)। ''विधि'' (*dikaioma*) ''धार्मिकता'' शब्दों का एक शब्द है; यहां इसका इस्तेमाल ''जिसे परमेश्वर ने सही घोषित किया है'' को बताने के लिए ''कानूनी शब्द'' है।[46] पौलुस इस विचार की ओर वापस आ रहा था कि इन पापियों ने अज्ञानता में ऐसा नहीं किया था। बुराई करने वाले हो सकता है कि

जो गलती कर रहे हैं, उसके सभी परिणामों को न समझ रहे हों, परन्तु मन में कहीं उन्हें यह मालूम है कि जो कुछ वे कर रहे थे, वह सही नहीं था।[47]

जब यह आयत कहती है कि ''वे ... जानते हैं कि ऐसे-ऐसे काम करने वाले *मृत्यु के दण्ड के योग्य हैं* '' तो इसका क्या अर्थ है? क्या इसका अर्थ यह है कि उन्हें इस बात की समझ है कि उनके किए पापों (जैसे हत्या) से वे मृत्युदण्ड के अधिकारी हैं (जैसा कि 13:4 में संकेत है)? क्या इसका अर्थ यह है कि उन्हें मालूम था कि उनके पापों ने उन्हें परमेश्वर से अलग कर दिया (आत्मिक ''मृत्यु'' में, रोमियों 6:23 की तरह)? हौज सम्भवतया सही था जब उसने लिखा ''जैसा कि आमतौर पर होता है, यहां पर मृत्यु का अर्थ उस शब्द के सामान्य अर्थ में दण्ड है।''[48] अन्य शब्दों में उन्हें मालूम था कि जो कुछ वे कर रहे थे वह गलत था, और अस्थाई हो या अनन्तकालिक वे *दण्ड के अधिकारी* थे।

गलत को स्वीकृति

क्या ऐसे ज्ञान ने उन्हें बुराई से दूर रखा? नहीं। पौलुस ने आगे कहा ''वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं, कि ऐसे-ऐसे काम करने वाले मृत्यु के दण्ड के योग्य हैं, तौभी ... आप ही ऐसे काम करते हैं'' (रोमियों 1:32क, ख)।

यह उनके विद्रोह का चरम नहीं था। पौलुस ने निष्कर्ष निकाला कि ''वे न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं, वरन करनेवालों से प्रसन्न भी होते हैं'' (आयत 32ख, ग)। ''प्रसन्न भी होते हैं'' *suneudokeo* का अनुवाद है, जो उपसर्ग *sun* (''के साथ''), पूर्वसर्ग *eu* (''अच्छा'') और *dokeo* (''सोचना'') को मिलाता है। इस मेल का मूल अर्थ ''के साथ अच्छा सोचना'' (अर्थात ''स्वीकृति देना'') है, परन्तु इसका एक ज़बर्दस्त अर्थ है। NASB में ''give *hearty* approval to'' है जबकि AB में ''approve and applaud'' है।

उनके पतन का सफ़र पूरा हो गया था। पहले तो वे परमेश्वर को जानना नहीं चाहते थे। इस कारण उनके मन भ्रष्ट हो गए थे और उनके जीवनों में हर प्रकार की अधार्मिकता आ गई थी। वे इतने कठोर हो गए थे कि वे परमेश्वर की चेतावनियों की ओर ध्यान नहीं देते थे। अन्त में सबसे बुरी बात यह हुई कि उन्होंने केवल खुद पाप ही नहीं किया, बल्कि दूसरों को भी करने के लिए उकसाया।

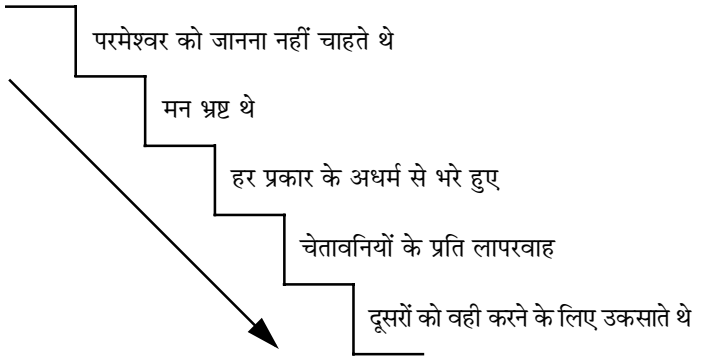

डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को ने टिप्पणी की है:

> प्रेरित को जिस बात ने परेशान किया वह केवल मन फिराव का न होना ही नहीं, बल्कि जश्न का होना भी था। असफलता और ज़िम्मेदारी की भावना से भरे होने से कोसों दूर, लापरवाही से रंगरलियां मनाने का वातावरण है। ... एक-दूसरे के प्राणों के रक्षक के रूप में कार्य करने के बजाय लोग एक-दूसरे के विनाश को प्रोत्साहित करने वाले के रूप में काम करते दिखाई देते हैं। जहां शोक की उम्मीद की जा सकती है, वहां आनन्द दिखाई देता है; पाप को पूरी तरह से नकाराने के बजाय अधार्मिकता को पूरी तरह से स्वीकारने की बात मिलती है।[49]

इसे पढ़ते हुए मैं प्रासंगिकता बनाए बिना नहीं रह सकता। क्या यह हो सकता है कि हम बुराई को प्रोत्साहित करने के दोषी हों? क्या हम ऐसी किताबें पढ़ते, ऐसी फिल्में और टीवी कार्यक्रम देखते और गाने सुनते हैं, जिनसे पापपूर्ण व्यवहार की तारीफ होती है? क्या हमने ऐसे लोगों को अपना आदर्श बनाया है, जिनके जीवन पाप में डूबे हैं? पाप की लपटों को प्रभावशाली ढंग से हवा देने के लिए उसकी तारीफ से बड़ा कोई काम नहीं है।

सारांश

अन्यजाति संसार को पौलुस द्वारा दोषी ठहराना विनाशकारी रहा है। आर. सी. बैल ने अवलोकन किया कि ''सब धर्मों में से केवल मसीहियत ही पाप के विशेष [उपचार] होने के कारण पाप को कम नहीं करती।''[50] कोई भी सही सोच वाला व्यक्ति मानेगा कि पौलुस ने अपनी बात साबित की थी: सब अन्यजाति पाप के दोषी थे; सबको परमेश्वर की धार्मिकता की अत्यधिक आवश्यकता थी।

1:18-32 का अध्ययन करते हुए मैंने पाया कि यह वचन मेरे अपने पाप को सामने लाता है। मैं अपने आप को ''बुरा'' नहीं मानता, परन्तु दूसरों से मुझे जलन रही है। मैं द्वेष से बचने की कोशिश करता हूं, पर घमण्ड से पीछा छुड़ाना मेरे लिए कठिन होता है। मैंने कभी किसी की हत्या नहीं की, पर मैं चुगलियां करने का दोषी हूं। शायद, आपको भी ''आत्मा की तलवार'' (इफिसियों 6:17) की नुकीली धार लगी हो।

क्या आपने यीशु में विश्वास लाकर प्रेमपूर्वक आज्ञा मानकर अपना विश्वास जताते हुए अपने आप को परमेश्वर के अनुग्रह पर छोड़ा है (यूहन्ना 14:15; मत्ती 7:21; मरकुस 16:16)? पसन्द आपकी है। यदि आप ''अपने आप को'' पाप के लिए देते हैं, तो परमेश्वर ''आपको'' आपके पाप के परिणाम के लिए दे देगा, परन्तु यदि आप अपने आपको परमेश्वर के हाथ सौंपते हैं तो वह आपको अपने प्रेम का उपहार देगा (रोमियों 6:23ख)।

टिप्पणियां

[1]जिम टाउनसेंड, *रोमन्स: लेट जस्टिस रोल* (एल्जिन, इलिनोइस: डेविड सी. कुक पब्लिशिंग कं., 1988), 16 में उद्धृत। [2]चॉर्ल्स आर. स्विंडल, ''सिन्नेरामा इन पैनोरमा'' (पार्ट 1) (अनाहिम, कैलिफोर्निया: इनसाइट फ़ॉर लिविंग, 1976), कैसेट। [3]ब्रूस बार्टन, डेविड वीरमैन, एण्ड नील विल्सन, *रोमन्स,* लाइफ़ एप्लिकेशन बाइबल कमैंट्री (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1992), 36। [4]जिम मैक्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्सस: मोंटेक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 88. [5]''उसने उन्हें छोड़ दिया'' पर और चर्चा इस पुस्तक में पहले की गई है। [6]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल ऍफ़. अंगर और विलियम वाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 526-27. [7]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1994), 78. [8]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 94. [9]वही। [10]*दि एनेलेटिकल ग्रीक लेक्सिकन* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1971), 186, 207.

[11]वही, 207. [12]फेडर डोस्टोइव्स्की, जिसका अनुवाद [थियोडोर डोस्टोयस्की] भी होता था, *दि ब्रदर्स कारामाज़ोव;* जैसा कि ''व्हट अबाउट होमोसेक्सुएलिटी?'' (ट्रैक्ट) (ओक्लाहोमा सिटी: बाय द ऑथर, तिथि नहीं), 2 में उद्धृत। [13]KJV ''unrighteousness'' और ''wickedness'' के बीच ''fornication'' शब्द जोड़ा गया है। नये नियम में अधिकतर ''बुराई की सूचियां'' ''फोरनिकेशन'' ''सैक्सुअल अनैतिकता'' के साथ आरम्भ होती है। उदाहरण के लिए (देखें गलातियों 5:19-21)। परन्तु इस मामले में पौलुस ने सेक्सुअल अनैतिकता की बात की थी (रोमियों 1:24-27)। [14]वाइन, 675; गरहर्ड किट्टल एण्ड गरहर्ड फ्रिडरिच, अनुवाद. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले abr. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 913 में जी.हार्डर, ''*pone ras*'' में ज्योफ्री डब्ल्यू ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट*। [15]*दि एलेनेटिकल ग्रीक लेक्सिकन,* 210. [16]वही, 193. [17]मौरिस, 97. [18]विलियम बार्कले, *दि लैटर टू द रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 37. [19]वाइन, 246. [20]मौरिस, 96.

[21]हैल्फोर्ड ई. लक्कॉक, *प्रीचिंग वैल्यूस इन द एपिस्टलज़ ऑफ़ पॉल,* अंक 1, *रोमन्स एण्ड फर्स्ट कोरिन्थियंस* (न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1959), 27. [22]वही, 28. [23]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप्पि वाई पैंडलटन, *थिस्सलोनियनंस, कोरिन्थियंस, गलेशियंस एण्ड रोमन्स* (सिनसिनटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग, तिथि नहीं), 305-6. [24]*दि एलेनेटिकल ग्रीक लेक्सिकन,* 105. [25]मौरिस, 96. [26]वाइन, 388. [27]जेम्स मैक्नाइट, *ए न्यू लिटरल ट्रांसलेशन, फ्रॉम द ओरिजनल ग्रीक ऑफ़ ऑल द अपोस्टोलिकल एपिस्टल विद ए कमैंट्री एण्ड नोट्स* (पृष्ठ नहीं; तिथि नहीं; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1984), 60. [28]वाइन, 388. [29]मोसेस ई. लार्ड *कमैंट्री ऑन पॉल'स लैटर टू रोमन्स* (लेक्सिंग्टन, कैंटकी: पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट आरकैंसा. गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 64-65. [30]*दि एलेनेटिकल ग्रीक लेक्सिकन,* 412.

[31]बार्कले, 37. [32]थियोफ्रेस्टस; बार्कले, 37. [33]वाइन, 71. [34]मौरिस, 98; बार्कले, 38. [35]टाउनसेंड, 17. थॉमस अलवा ऐडिसन (1847-1931) को इतिहास में सबसे बड़ा खोजी माना जाता है। उसने साठ वर्षों में 1100 से अधिक आविष्कार पेटेंट करवाए। बिजली की रौशनी उसके सबसे प्रसिद्ध आविष्कारों में से एक है। [36]वाइन, 173. [37]*दि एलेनेटिकल ग्रीक लेक्सिकन,* 57, 404. [38]जहां आप रहते हैं वहां इस भाग में से और अगले भाग के उचित उदाहरणों का इस्तेमाल करें। [39]मौरिस, 99, n. 313. [40]वाइन, 16.

[41]बार्कले, 39. [42]NKJV में ''unloving'' और ''unmerciful'' के बीच ''unforgiving'' रखा गया है। क्षमा न कर पाना कठोर और निर्दयी होने की एक अभिव्यक्ति है, इसलिए इसे उन शब्दों में बताया गया है। [43]बार्कले, 39. [44]स्टॉट, 78. [45]चॉर्ल्स हौज, *रोमन्स,* दि क्रॉसवे क्लासिक कमैंट्री (व्हीटन, इलिनोइस: क्रॉसवे बुक्स, 1993), 41. [46]मौरिस, 99. [47]वही। [48]हौज, 42. [49]डी. स्टॉट ब्रिस्को, *मास्टरिंग द न्यू टैस्टामेंट: रोमन्स,* दि कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़ (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 52. [50]आर. सी. बेल, *स्टडीज़ इन रोमन्स* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 16.